शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

चित्त संशोधन के बिना बुद्धि खुलती नहीं

विनोबा

हमारा मुख्य काम है, चित्त निर्माण का। अगर चित्त बनता नहीं हे तो संस्था बेकार साबित होगी। जिसे अध्ययन की इच्छा है, वह ब्रह्मविद्या-मंदिर में नहीं है। ब्रह्मविद्या में विद्या भी कर्तव्य नहीं हैं। शंकराचार्य ने सिखाया है कि 'तव्य' प्रत्यय कटना चाहिए। जो पढ़ने की इच्छा रखता है, वह ब्रह्मविद्या-मंदिर में नहीं, विद्या-मंदिर में हो सकता है। इस वास्ते 'मेरे पास ज्ञान है' या 'मेरे पास ज्ञान नहीं है' - दोनों तरह का भान चित्त को होना ब्रह्मविद्या में नहीं आता। मैं ग्रन्थ पढ़ता हूं, भाषा सीखता हूं, यह ज्ञान के लिए नहीं, सेवा के लिए, प्रेम के लिए। जिसे अध्ययन चाहिए, संगीत चाहिए, खेती चाहिए, ऐसा कुछ कर्तव्य शेष है, वहां ब्रह्मविद्या नहीं आती। अपनी जो भी शक्ति है, उसका उपयोग समाज की सेवा में करना चाहिए। ज्ञान-दाता भीतर बैठा है। निष्काम सेवा करते रहेंगे और सबमें अंतर्यामी का रूप देखने की कोशिश करेंगे, तो धीरे-धीरे मोह के पटल खुल जायेंगे। और दिमाग जब खुल जाता है, तब शास्त्रों के अर्थ ग्रहण होते हैं। वहां पर जो मुख्य रुकावट है, वह अहं की है। अध्ययन से ब्रह्मविद्या प्रकट होगी, यह खयाल गलत है। इसलिए आप कितना भी अध्ययन करेंगे तो भी आपसे दस गुना विद्वान बाहर हैं। लेकिन वे शंकराचार्य नहीं हैं। शंकराचार्य विद्वान तो थे, लेकिन उनके पास अनुभव था। अनुभव न हो तो विद्वत्ता किस काम की ? यह बात ठीक है कि अनुभव का ठीक से प्रकाशन करने क लिए वाक् शक्ति चाहिए। अध्ययन हो तो अनुभव रखने में, शास्त्रकार बनने में मदद होगी। लेकिन मुख्य बात है, अनुभव। इस वास्ते एक बात समझ लेनी चाहिए कि तत्व-जिज्ञासा उचित है, अच्छी है। लेकिन चित्त परिपूर्ण शुद्ध करना ही मुख्य उपाय है। उसके बगैर बुद्धि खुलती नहीं है और ग्रंथ पढ़ने पर भी निश्चय के बदले संशय बढ़ता है। शास्त्र-वचन, संत-वचनों का एक हद से ज्यादा उपयोग नहीं है। मुख्य चीज है चित्त-संशोधन। छोटा-सा वाक्य मैंने बहुत साल पहले लिखा था, जितने व्यक्ति उतने मार्ग। प्रत्येक को अपने मार्ग पर ही चलना होगा। दूसरे का उदाहरण प्रेरणास्वरूप है, उत्साहजनक है। उससे ज्यादा मदद होगी नहीं। अपने हृदय में क्या-क्या दोष हैं, उन्हें पहचानना और तद्निवारणार्थ जो करना पड़े सो करना। आध्यात्मिक अध्ययन में हर विचार अपने जीवन के साथ जुड़ेगा। स्वाध्याय कैसे करना, यह गीता में भगवान ने बताया है। तप हो, भक्ति हो, श्रवण की तीव्र इच्छा हो, किसी का मत्सर न हो। हमें इसकी चिंता करनी चाहिए कि चित्त में मत्सर न हो। काम, क्रोध, लोभ, मोह छूट सकते हैं, लेकिन मत्सर चिपकता है। वह जल्दी छूटता नहीं। मत्सर बहुत बड़ा शत्रु है। वह कहीं-न-कहीं दिमाग में बैठा रहता है। दूसरे प्राणियों में मत्सर नहीं दीखता। इसलिए देखना चाहिए कि हमारे चित्त से मत्सर हटे।

- *ब्रह्मविद्या-मंदिर, एक अभिनव दर्शन*